शब्द शक्तियाँ

डॉ. दीप्ति धीर
सहायक प्रोफ़ेसर,
हिंदी विभाग ।

शब्द शक्तियाँ

शब्द शक्ति – शब्द अपना अर्थ बोध करने का कार्य जिस शक्ति के द्वारा सम्पादित करता है , उसे शब्द की शक्ति कहा जाता है ।

शब्द शक्तियों के तीन प्रकार माने गये हैं –

1 अभिधा

2 लक्षणा

3 व्यंजना

1. अभिधा – जिस शब्द- शक्ति से साक्षात् सांकेतिक या मुख्य अर्थ का बोध होता है, उसे 'अभिधा' शक्ति कहते हैं ।

अभिधा की परिभाषा – भाषा की जिस शक्ति से शब्द के सामान्य प्रचलित अर्थ का बोध होता है वह अभिधा-शक्ति कही जाती है ।

अभिधा शब्द शक्ति का उदाहरण –

मोहन पुस्तक पढ़ रहा है ।

अभिधा के प्रकार –

१ रूढ़ शब्द

२ यौगिक शब्द

३ योग रूढ़

१. रूढ़ि शब्द - वे शब्द जिनका अर्थ तय हो, उनमे बदलाव नही हो सकते उन्हें रूढ़ि शब्द कहते है।

जैसे:- रोटी, कलम, पेड़ आदि ।

२. **यौगिक शब्द -** दो शब्दों के जोड़ से प्राप्त एक नये अर्थ की प्रतीति कराने वाले शब्द को यौगिक शब्द कहते है। इसमे दोनों शब्दों को अलग अलग करने पर उनका एक स्वतंत्र अर्थ भी होता है।

जैसे:- बैलगाड़ी, मालगाड़ी आदि।

३. **योगरूढ़ -** वे योग शब्द जो समाज में अब एक विशेष अर्थ के लिए रूढ़ हो गये है अर्थात उनका कोई भिन्न अर्थ हो भी फिर भी उन सबसे एक अर्थ विशेष की प्रतीति होती है।

जैसे:- मुरलीधर, मधुसूदन, गोपाल आदि।

यहाँ गोपाल 'गो' तथा 'पाल' के योग से निर्मित है जिसका अर्थ है गाय पालने वाला पर इसका अर्थ कृष्ण के लिए रूढ़ हो गया है।

2. लक्षणा शब्द शक्ति – इसमें शब्दों का मुख्यार्थ से भिन्न, लक्षणा शक्ति द्वारा अन्य अर्थ लक्षित होता है ।

लक्षणा शब्द शक्ति का उदाहरण –

तुम्हारा नौकर बिलकुल गधा है ।

यहाँ गधा का अर्थ – गधे जैसी बुद्धि वाला है ।

लक्षणा के भेद –

१. रूढ़िलक्षणा

२. प्रयोजनवती लक्षणा

१. रूढ़िलक्षणा – इसमें रूढ़ि के कारण मुख्यार्थ को छोड़कर उससे सम्बन्ध रखने वाला अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है ।

रूढ़िलक्षणा की उदाहरणें –

१. मेरे पेट में आग लगी है ।

पेट में आग लगी का अर्थ है – तीव्र भूख

२. 'आप तो एकदम राजा हरिश्चन्द्र है ।

इसका लक्ष्यार्थ है आप हरिश्चन्द्र के समान सत्यवादी हैं।

२. प्रयोजनवती लक्षणा – इसमें किसी विशेष प्रयोजन के कारण मुख्यार्थ से सम्बन्ध रखने वाला लक्षणार्थ ग्रहण किया जाता है ।

प्रयोजनवती लक्षणा का उदाहरण –

बहुत सी तलवारें मैदान में आ गईं ।

इसमें 'तलवारें' का अर्थ है – तलवारबंद सिपाही

प्रयोजनवती लक्षणा के दो प्रकार हैं –

१. गौणी लक्षणा

२. शुद्धा लक्षणा

१. गौणी लक्षणा – इसमें गुण सादृश्य के आधार पर लक्ष्यार्थ का बोध होता है ।

गौणी लक्षणा का उदाहरण –

मुख चन्द्रमा है ।

इसमें लक्ष्यार्थ यह लिया जाता है कि मुख चन्द्रमा के समान सुंदर है ।

गौणी लक्षणा के दो प्रकार है –

१. सारोपा लक्षणा

२. साध्यवसाना लक्षणा

1. सारोपा लक्षणा – जब किसी पद में विषय/उपमेय और विषयी/उपमान दोनों का शब्द द्वारा निर्देश करते हुए अभेद बतलाया जाता है , वहाँ सारोपा लक्षणा होती है |

जैसे – उदित उदयगिरि मंच पर रघुवर बाल पतंग |

यहाँ उदयगिरि रूपी मंच पर राम रूपी प्रभातकालीन सूर्य का उदय दिखाकर उपमेय का उपमान पर अभेद आरोप किया गया है अत: यहाँ सारोपा लक्षणा है ।

सारोपा लक्षणा का अन्य उदाहरण –

'सीता गाय है।'

इसका लक्ष्यार्थ है- सीता सीधी-सादी है। यहाँ गाय (विषयी) का सीधापन-सादापन सीता (विषय) पर आरोपित है।

2. साध्यवसाना लक्षणा – इसमें केवल विषयी/उपमान का कथन होता है, लक्ष्यार्थ की प्रतीति हेतु विषय/उपमेय पूरी तरह छिप जाता है।

जैसे – जब शेर आया तो युद्ध क्षेत्र से गीदड़ भाग गए |

यहाँ शेर का तात्पर्य वीर पुरुष से है तथा गीदड़ का तात्पर्य कायरों से है | उपमेय को पूरी तरह छिपा देने के कारण यहाँ साध्यवसाना लक्षणा है |

साध्यवसाना लक्षणा का अन्य उदाहरण –

जैसे कोई मालिक खीझ कर नौकर को कहे कि -

'बैल कहीं का।'

इस वाक्य में विषय (नौकर) का निर्देश नहीं है, केवल विषयी (बैल) का कथन है।

२. शुद्धा लक्षणा – इसमें गुण सादृश्य को छोड़कर अन्य किसी आधार पर यथा – समीपता , साहचर्य, आधार-आधेय सम्बन्ध के आधार पर लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है ।

शुद्धा लक्षणा की उदाहरणें –

१. मेरे सिर पर क्यों बैठते हो ।

इस वाक्य में सामीप्य सम्बन्ध है ।

२. लाल पगड़ी आ रही है । (सिपाही – सादृश्य सम्बन्ध)

3. व्यंजना शब्द शक्ति – जिन शब्दों से व्यंग्यार्थ का बोध होता है वे व्यंजक शब्द कहे जाते हैं ।

व्यंजना का उदाहरण –

घर गंगा में है ।

इस वाक्य में ‘घर गंगा की तरह पवित्र है’ में व्यंजना है ।

व्यंजना के दो भेद माने जाते हैं –

१. शाब्दी व्यंजना
२. आर्थी व्यंजना

१. शाब्दी व्यंजना – इसमें शब्द विशेष के कारण व्यंग्यार्थ का बोध होता है और शब्द हटा देने पर व्यंग्यार्थ समाप्त हो जाता है ।

शाब्दी व्यंजना के दो प्रकार होते हैं –

१ अभिधामूला शाब्दी व्यंजना

२ लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना

१. अभिधामूला शाब्दी व्यंजना - अभिधात्मक शब्द पर आश्रित (निर्भर) शाब्दी व्यंजना 'अभिधामूला शाब्दी व्यंजना' कहलाती है।

उदाहरण -

चिर जीवो जोरी जुरै, क्यों न सनेह गँभीर।
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर।। -बिहारी

बिहारी के इस दोहे का अभिधेयार्थ है- राधा कृष्ण की यह जोड़ी चिरजीवी हो। इनका गहरा प्रेम क्यों न जुड़े ? दोनों में कौन किससे घटकर है ? ये वृषभानुजा (वृषभानु + जा = वृषभानु की जाया/बेटी = राधा) है और वे हलधर (बलराम) के वीर भाई यानी कृष्ण।

किन्तु 'वृषभानुजा' एवं 'हलधर के वीर' शब्द अनेकार्थक है, अतः उनसे दूसरा और तीसरा अर्थ भी ध्वनित होता है। दूसरे अर्थ में ये वृषभ + अनुजा =बैल की बहन यानी 'गाय' है और वे हलधर = बैल के वीर =भाई यानी 'साँड़' है। तीसरे अर्थ में ये 'वृष राशि में उत्पन्न' है और वे 'शेषनाग के अवतार'।

इस दोहे में 'वृषभानुजा' के स्थान पर 'राधा' एवं 'हलधर' के स्थान पर 'बलराम' शब्द का प्रयोग कर दिया जाये तो यह व्यंग्यार्थ नष्ट हो जायेगा।

२. लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना - लाक्षणिक शब्द पर आश्रित व्यंजना 'लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना' कहलाती है।

उदाहरण : फली सकल मनकामना, लूट्यौ अगणित चैन।
आजु अँचे हरि रूप सखि, भये प्रफुल्लित नैन।।

इस उदाहरण में लक्षणा के 'फली' का अर्थ है- पूर्ण हुई, 'लूटयौ' का अर्थ है- प्राप्त किया और 'अँचै' का अर्थ है- देखा। किन्तु व्यंजना से संपूर्ण पद का व्यंग्यार्थ है- प्रियतम के दर्शन से अत्यधिक आनंद प्राप्त किया।

२. आर्थी व्यंजना – इसमें व्यंजना किसी शब्द विशेष पर आधारित ना होकर अर्थ पर आधारित होती है ।

आर्थी व्यंजना का उदाहरण –

आँचल में है दूध और आँखों में पानी ।

इसमें नारी के दो गुणों की व्यंजना होती है – उसका मातृत्व भाव और कष्ट सहने की क्षमता ।

इसमें व्यंग्यार्थ अर्थ के कारण है ।

निष्कर्ष – किसी शब्द का महत्व उसमें निहित अर्थ पर होता है । बिना अर्थ के शब्द निरर्थक होता है । अतः शब्द शक्ति के द्वारा शब्द में निहित इसी अर्थ की शक्ति पर विचार किया जाता है । शब्दों के अर्थ ग्रहण से ही रचना आनन्ददायक बनती है ।